उसकी आवाज बाकी है

व

अन्य कविताएं

संघर्ष व निर्माण के महाकवि
शहीद शंकर गुहा नियोगी
को
गीत - कविताओं की श्रद्धांजलि

शहीद शंकर गुहा नियोगी यादगार समिति
लोक साहित्य परिषद्

प्रथम प्रकाशन : १४ फरवरी, १९९२

सहायता राशि : चार रुपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद
द्वारा - छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. ऑफिस
दल्ली-राजहरा
दुर्ग (म. प्र.) ४९१२२८

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस
बालोद

संघर्ष व निर्माण के महाकवि थे वीर शंकर गुहा नियोगी, वे महाकाव्य के एक नायक भी थे। ४८ साल के स्वल्प आयु में उन्होंने बहु जन-आन्दोलन संगठित किये, नेतृत्व दिये। उनका संघर्षशील जीवन देश के कवि - साहित्यकारों को आकर्षित करता रहा।

इस संकलन में जो कवितायें शामिल हैं उनमें से कुछ उनके जीवन काल में ही लिखी गई थी और २८ सितम्बर १९९१ उनकी शहादत के बाद तो देश के नाना भाषाओं में उनपर कवितायें लिखी जा रही हैं। इन कविताओं से चुनी हुई कुछ कवितायें इस संकलन में प्रस्तुत हैं।

प्रथम प्रकाशन : १४ फरवरी, १९९२

सहायता राशि : चार रुपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद
द्वारा - छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. ऑफिस
दल्ली-राजहरा
दुर्ग (म. प्र.) ४९१२२८

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस
बालोद

उसकी आवाज बाकी है

फिर एक बार
मेहनत और
मेहनतकशों को नकारा गया,
जो बन गया था
बेबसों की आवाज
उसे सरे आम मारा गया
कातिलों,
कोई फर्क नहीं पड़ता
नियोगी के मर जाने से
हवा में उसकी आवाज बाकी है,
जिन तारों को छेड़ा है,
उसकी उंगलियों ने
टूटा नहीं, वह साज बाकी है
हां,
एक जख्म हो गया
हमारे सीने पर
जिसे वक्त जरुर सी देगा,
देर से ही सही
नियोगी का ये बलिदान
हमें फिर एक नियोगी देगा ।

डॉ० इश्तियाक
१९१/१०/९१

क्रम

१.	उसकी आवाज बाकी है	– डॉ० इश्तियाक	१
२.	विचार नहीं मरता	– श्याम बहादूर नम्र	२
३.	काव्यांजलि	– श्रीराम अकेला	३
४.	कल रात जब मै सो रहा था	– अमित सेनगुप्ता	४
५.	कामरेड जिन्दा है	– जितेन्द्र साहू	५
६.	शंकर मर नहीं सकता	– दिलीप बागची	६
७.	शंकर गुहा नियोगी	– बाबा आमटे	७
८.	सच्चा योगी	– हरि ठाकुर	१२
९.	स्वप्न द्रष्टा-शंकर गुहा नियोगी	– रक्षा शुक्ला	१३
१०.	नियोगी की शहदत का संदेश	– डॉ० अनिल सद्गोपाल	१७
११.	वह मौत, जो हर गांधी मरता है	– डॉ० अजीज रफीक	२३
१२.	तुम्हें याद करेगा	– कल्पना घोष	२६
१३.	तुम्हें क्रांतिकारी सलाम	– अमित	२७
१४.	सारा जेल हैरान है	– भारत डोगरा	२८
१५.	आज की ताजा खबर	– श्याम बहादूर नम्र	३०
१६.	एक अभेद्य दीवार	– सुरेश सलिल	३२
१७.	हम जागे हैं...	– शीला चक्रवर्ती	३३
१८.	उनके यादें रहें...	– सृजन सेन	३५
१९.	शंकर एक उज्जवल सितारा का नाम	– समीर राय	३६

शंकर के हत्यारों से कह दो
सूरज ऊग कर डूबता नहीं,
सिर्फ डुबने का भ्रम पाल
रखा है हमने ।

शंकर एक नाम नहीं,
नेक काम था,
सुविचार था,
और विचार कभी मरते नहीं ।

कुछ लोग भ्रम में है,
शंकर मर गया,
नहीं——
वो मरा नहीं,
मारा गया,
और जो मारा गया
वही अमर हो गया ।

श्रीराम अकेला (बसना)
१३/१०/९१

कल रात जब मै सो रहा था ....

कल रात जब मै सो रहा था, कांप उठी चारपाई
बिस्तर पर बैठा हुआ था, हमारा नियोगी भाई
फिर मैने उससे पूछा, तुम कैसे जिन्दा हो ?
कल रात कसाइयों के हाथ, तुम तो मर गये हो,
फिर कैसे जिदा हो ?
उन्होंने मुझसे हंसकर बोला, जो लोग शहीद होते हैं,
वो मरते नहीं, हमेशा हमेशा के लिये जिन्दा रहते हैं,
वो मरते नहीं हैं ।
फिर मैंने देखा, नियोगी अकेला नहीं था,
साथ में था जुलुस विशाल
सभी ने हाथों में उठा रखा था, झंडा हरा-लाल,
झंडा हरा-लाल
पैरी कम्युन से नियोगी तक जो भी लोग शहीद हुए हैं
उन सभी को देखा नियोगी के साथ शामिल हुए हैं,
फिर जुलुस आगे बढने लगा, मैंने बोला नियोगी जी- राम-राम
नियोगी जी ने मुझको हंसकर बोला कामरेड लाल सलाम,
सलाम लाल सलाम ।

अमित सेन गुप्ता

(अमित सेन गुप्ता छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का सांस्कृतिक मंच "नवा आंजोर" के अन्यतम प्रधान संगठक रहे । आलफ्रेड हेइस की एक बहु परिचित गीत को का. सेन गुप्ता ३० सितम्बर, ९१ को रुपांतरित किये हैं ।)

कामरेड जिन्दा है

कामरेड मारा गया
भिलाई में,
कामरेड मारा गया
पेशेवर हत्यारों के गोली से,
कामरेड की चिता जली
राजहरा के मैदान में ।
कामरेड जिन्दा है
राजहरा के खदानों में
मजदूरों में,
कामरेड जिन्दा है
अपने सहयोगियों के साथ
बीड़ी पीते हुये
कामरेड नियोगी जिन्दा है ।
मरा कहां है कामरेड !
कामरेड जिन्दा है
राजहरा में भिलाई में
खदानों में मिलों में
मजदूरों के दिलों में,
कामरेड जिन्दा है
सारी दुनियां में
जहां श्रमिकों के लिये
उठाई जाती है आवाज...
कामरेड जिन्दा है

जितेन्द्र साहू

(खैरागढ संगीत विश्वविद्यालय के छात्र जितेन्द्र साहू ने यह कविता एक पोस्टर में लिखी है।)

शंकर मर नहीं सकता

अब रोने का वक्त नहीं है,
अब आंसू बहाना है नहीं,
शंकर की चिता छु-लो,
अब हर दिल में शपथ लो यही,
उसी आग से हत्यारों को जलाकर राख बना दो,
एक चिराग से लेकर आग अब लाखों चिराग जला दो ।

एक-एक मजदूर एक-एक शंकर,
एक-एक शंकर हर किसान,
लहराता नभ में सबका शंकर,
बनकर लाल–हरा निशान ।
अब रोने का वक्त नहीं.....

एक शंकर को छीन लिया,
न आदर्श उनका छीन सका,
छत्तीसगढ़ से उनका विचार,
हिन्दुस्तान भर फैल चुका ।
अब रोने का वक्त नहीं.....

दिलीप बागची

(पश्चिम बंगाल के क्रांतिकारी कवि दिलीप बागची के साथ कामरेड नियोगी का प्रथम व अन्तिम साक्षात् २१ सितम्बर ९१ को हुआ । एक सप्ताह बाद नियोगी की शहादत की खबर सुनकर उन्होने यह कविता लिखी ।)

शंकर गुहा नियोगी

वह
एक सुनियोजित हत्या थी
सरेआम हकबका देने वाली हत्या।

हत्या
जो हमारी सभ्यता का मजाक उड़ाती है।
सभ्यता
जो शताब्दियों में विकसित होती है
किन्तु
क्षणों में ही बदल जाती है
पाशविकता में

वह
उन लोगों के षड़यन्त्र का शिकार हो गया।
जो एक प्रबुद्ध, अविषम, प्रगतिशील समाज में
विश्वास नहीं करते।

वह
जो उसके जीते जी
उसके खून के प्यासे थे
अपनी क्रुरता को धार्मिक जामा पहना
उसे शहीद कह कर
मजाक उड़ा रहे हैं।

वह
एक मजबूत किला था
जिसे कायरों ने बारूद से उड़ा दिया।

शंकर गुहा नियोगी
जिसे मैं ईश्वर का प्रवक्ता मानता हूं
उसमें पीड़ाओं को सहने की
अपूर्व क्षमता थी।
उसके लहू में साहस
और हड्डियों में दृढ़ विश्वास था
मैंने कभी नहीं देखा
कोई युवा उसके जैसा
जिसमें इतनी गहन संवेदनशीलता
और विवेक के साथ
अभिव्यक्ति की आश्चर्यजनक क्षमता हो।

उसने अपनी जनता को समझाया
कि वे कौन हैं
उसने उनके लिये
उन सड़कों का नक्शा तैयार किया
जिनसे होकर संघर्ष का रास्ता
तय होता है।

उसने श्रमिकों को
न्याय और स्वतंत्रता के लिये
लड़ने की तमीज सिखाई
वह अपने ध्येय के प्रति
सम्पूर्ण शक्ति और निष्ठा के साथ समर्पित था

वह
आश्चर्यजनक तेजी के साथ
कड़े से कड़े निर्णय लेने का आदी था
बड़ी से बड़ी ताकत से निपटने के लिये

उसमें योद्धाओं जैसी स्फूर्ति थी
जुए के खिलाड़ियों जैसी चतुरता थी
सत्ताखोर अटकलें ही लगाते रह जाते थे
वह उनके तुरुप के पत्तों की
पहले ही भाप लेता था
और अपने साथियों को
सही दिशा निर्देशित कर देता था
उसने
अपने साथियों को
सुदृढ़ ट्रेड युनियन में
संगठनबद्ध कर लिया था।

वह
संघर्ष के समय
एथलीट की तरह अचूक था
जनता को विश्वास दिलाने में
उसे जादूगर की महारत हासिल थी
सबसे बड़ी बात
उसमें सज्जनोचित संतुलन था।

भावनाओं के स्तर पर
वह मार्क्सवादी था
उसने
राजनीतिज्ञ मार्क्स को
बहुत पीछे छोड़ दिया था
राजनीतिज्ञ मार्क्स
जो बिखर सकता है, पराजित हो सकता है
उसने
मानवतावादी मार्क्स को विकसित किया।

उसमें
अकलुष निष्ठा थी।
शंकर गुहा नियोगी
एक भविष्यद्दृष्टा था
जिसे जेहाद के विस्तार में
मजा आता था
संघर्ष के बीचोबीच होने में
वह हर्ष का अनुभव करता था।

जो भी भले नागरिक हैं
वे आम जनता के हितों में
नियोगी द्वारा निर्देशित फैसलों के अमल में
भागीदार बनें
अपने प्रतिपक्ष के प्रति भी
सौजन्य की घोषणा करें
जो उस जघन्य हिंसा से
अधिक प्रभावशाली है
जिसके चलते नियोगी की हत्या हुई।

ओह! परम कलंक!
गांधी के देश में
नियोगी जैसे साथी की हत्या!!
रक्त के प्यासे भेड़िये, माफिया गिरोह
उद्योगपति और बौने राजनीतिज्ञ
अब चल रहे हैं
अपनी मनचाही चाल
उन लोगों को नेस्तनाबूत करने के लिये
जो उनकी सत्ता को
दे रहे हैं चुनौती

छत्तीसगढ़ में या नर्मदा घाटी में ।

नर्मदा के तट से
अंतिम कराह की फुसफुसाहट
गुंजती है
पुकारती है नागरिकता
नागरिकता को
न्याय न्याय को गुहारता है
नियोगी कभी नहीं मरता
मरते हैं उसके विरोधी ही ।

उसके संघर्ष को
और तेज करना
उसके क्षितिज को निरंतर विस्तार देना
यही संकल्प और विवेक
उसको सच्ची श्रद्धाजंलि है
जैसा कि लूथर ने कहा था–
„बाकी सब फिजूल है ।"

नर्मदा की आंखों से अनचुए आंसू
अपने इस कामरेड को
स्मरणाजंलि अर्पित करते हैं
जो अनन्त शांति की गोद में सो गया ।

-बाबा आमटे

(प्रसिद्ध समाज सेवी बाबा आमटे ने यह कविता २ अक्टूबर १९९१ को नर्मदा घाटी में लिखी थी । अंग्रेजी में लिखी इस कविता का अनुवाद हरि ठाकुर ने किया है ।)

सच्चा योगी

युगों-युगों के बाद नियोगी जन्म लिया करता है।
सब को अमरित बांट और खुद जहर पिया करता है॥
वह मशाल बन अंधकार से युद्ध किया करता है।
मौत मरा करता, शहीद की क्रांति जिया करता है॥
जो अपने लहू से लिखता है बलिदान कथाएं।
उसका ही इतिहास लिखा करती है सब भाषाएं॥
उसका ही साहित्य बढ़ाता है समाज को आगे।
ऐसे क्रांति पुरूष के पीछे यश छाया बन भागे॥
उसकी आंखों में सपनों की पौध पला करती है।
उसकी सांसों में ज्वाला की ज्योति जला करती है॥
उसकी मुट्ठी में आंधी की शक्ति हुआ करती है।
उसके मन में लोकशक्ति की भक्ति हुआ करती है॥
जब चलता वह, साथ-साथ तूफान चला करता है।
उसके सपनों के सांचे में देश ढला करता है॥
लोक साधना में जीता जो वह है सच्चा योगी।
ऐसे लोगों को हम कहते शंकर गुहा नियोगी॥

-हरि ठाकुर

(हरि ठाकुर छत्तीसगढ के प्रख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, साहित्यकार व इतिहासविद है। छत्तीसगढ के मुक्ति दूत के प्रति हरि ठाकुर की यह श्रद्धांजलि।)

छिपे हैं हत्यारे
हर कोने-आंतर में।
मुस्कानों के नीचे
छिपी हैं
पिस्तौलें,
मशीनगनें,
टाइमबम।

धरती
आकाश
और जल में
होती है
रोज-रोज
हत्यायें।

हत्याओं के शिकार
निहत्थे होते हैं
निर्दोष होते हैं
और उनका हृदय होता है
निर्मल।

मारने वाले–
नहीं देखते
कि प्रार्थना कर रहा है कोई-
या
आशिष दे रहा है
झुककर-

या फिर शंकर गुहा नियोगी
की तरह
रात एक बजे तक
काम करते-करते
थक कर सोया
देख रहा है शायद
मीठे सपने
रोज की तरह।
क्योंकि उसकी आदत थी
सपने देखना
और फिर
उन सपनों को
जीवन में ढालकर
पूरा कर लेना।

वह पहला आदमी था
मामूली सा
जिसके सपने
अपने ही नहीं
सबके थे।
और वे सपने
उसने सच कर दिखाये थे।

उसने दिखाया था
कि दल्ली-राजहरा की
लाल-लाल मिट्टी में
रचे-बसे लोगों का
खून कितना लाल है।

कि केवल
बुद्धिजीवी
व्यापारी
या बड़े-बड़े लोग नहीं
वहां की स्त्रियां
वहां के बच्चे
वहां का मजदूर भी
और सबकी तरह आदमी होता है
जानवर नहीं है।

इस मजदूर के
छोटे-छोटे सपनों से
उसके परिश्रम से
उसकी लगन से
उसकी तपस्या से
डरने लगे थे
कुछ बड़े-बड़े लोग
और उन्हें लगा
कि हिलने लगा है शायद
उनका सिंहासन
डोलने लगा है।

उसके सपनों से
इतने डर गये वे
कि छद्म से सोते-सोते
करवा दी
उसकी हत्या
चुपचाप
आधी रात को।

शायद इसलिये
कि देख न ले कहीं वो
एक और नया सपना
और सुबह उठकर उसे
कर न ले पूरा।

वे डरे हुए लोग
यह भी नहीं जानते
कि प्राण लेकर किसी के
मरते नहीं सपने।
सपने तो हमेशा
अमर होते हैं
और अमर होता है
उस जैसा
स्वप्न द्रष्टा।

रक्षा शुक्ला

(रक्षा शुक्ला के पुत्र राकेश शुक्ला दीर्घ समय तक छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के साथ काम किये हैं। पुत्र के कामरेड के प्रति मां की आशिष है यह कविता।)

नियोगी की शहादत का संदेश

(१)

'यह दुनियां बहुत सुंदर है,"
यह मैं जानता हूं।
इस दुनियां में शोषण खत्म हो,
यह मैं चाहता हूं।
एक दिन दुनियां की हर कली खिल उठेगी,
यह मैं मानता हूं।
दुनियां का ऐसा नक्शा अपने आप नहीं बनने वाला है।
"मेरे चाहने से सब कुछ नहीं होने वाला है।"
इसकी सुन्दरता की खातिर हमको कुर्बानी देनी होगी।
मौत के सामने हंसना सीखना होगा।
जेल की सलाखों को हाथों की गर्मी से
गलाना सीखना होगा।
तभी तो दुनियां की सुन्दरता निखरेगी।
कहें जिंदगियों के खप जाने,
कई पीढ़ियों के संघर्ष के बाद ही,
हर इंसान के लिये दुनियां सुन्दर बन सकेगी।

(२)

"मैं सुन्दर दुनियां को अवश्य प्यार करता हूं।"
अपनी सुन्दर जिंदगी को भी प्यार करता हूं।
इसलिये खेत-खलिहानों से खदानों तक
बस्ती, मुहल्लों से कारखानों तक
हिम्मत और न्याय की जोत जलाने के लिये,
इंसान से मशीन बनाने के लिये नहीं,
वरन् मशीन में इंसानियत जगाने के लिये

दुनियां के विकास में हरेक को
बराबर का हिस्सा दिलाने के लिये,
इंसान को कुदरत पर राज करने के लिये नहीं,
पर कुदरत के साथ जिन्दा रहना सिखाने के लिये,
मैंने अपनी मौत से खौफ खाना बंद कर दिया है,
खिड़कियां खोल कर सोना शुरू कर दिया है।
पुलिस की रायफल,
गुंडों के कट्टों,
और उद्योगपतियों की धमकियों के सामने
सीना खोलकर घूमना शुरू कर दिया है।
दरअसल,
उनकी सीमा को पहचानना शुरू कर दिया है।
उनके दिलों में समाये डर को जानना शुरू कर दिया है।
मैं जान गया हूं कि दुनियां की सुंदरता से
वे खौफ खाते हैं।
दुनियां को हर इन्सान प्यार कर सके,
इससे वे घबड़ाते हैं।
मजदूरों की ताकत को खत्म करने के लिये,
वे विदेशों से भारी भरकम मशीनें लाते हैं।
मेहनतकश की कमाई को लूट कर
काले धन का पहाड़ बनाते हैं।
दुनियां सुंदर न रहे
इसके लिये मेरे एक बेटे को
कारखाने के अंदर गुलाम बनाते हैं।
पर जब वह सीना तानकर
शोषण के खिलाफ इंकलाब का नारा लगाता है,
तो वे मेरे दूसरे बेरोजगार बेटे को
बाहर गेट पर चाकू बन्दूक थमा कर

अपने भाई को मारने का सबक सिखाते हैं।
यह उनका प्रोग्राम है
दुनियां की सुंदरता छीन लेने का।

(२)

इसके बावजूद दुनियां बहुत सुंदर है।
पर इसमें एक व्यवस्था चलती है
जो कुछ इन्सानों को राक्षस,
कुछ को मशीन, कुछ को हिटलर बनाती है।
यह नौजवानों के हाथों में
कुदाली, हथोड़े और लेथ के बजाय
चाकू, कट्टा और ए. के. ४७ थमा देती है।
जो इससे बच जाते हैं उन्हें
स्मैक के सहारे जिन्दा लाश बना देती है।
यह दुनियां को बदसूरत बनाने की साजिश है।
इसमें मजहब से मजदूरों को बांटा गया है।
गीता, कुरान और गुरूग्रंथ साहिब के
प्यार भरे सन्देश को दरकिनार कर,
अयोध्या, मक्का-मदीना व स्वर्ण मंदिर के नाम पर
हमको ही ललकारा गया है।
कभी भाषा, कभी जाति और कभी सरहदों का
उन्माद पैदा कर,
मजदूर को मजदूर से भिड़ाया गया है।
बेरोजगारी, मंहगाई व पानी की कमी का
सोचा समझा हौवा खड़ा कर,
आम जनता को उलझाया गया है।
देश के कुछ हिस्सों को
पूंजीपतियों के इशारों पर
लंबे अर्से से बेरोक-टोक लुटवाया गया है।

जब जनता इस साजिश को समझने लगी,
व्यवस्था की नींव हिलने लगी,
तो राजनीति का खिलवाड़ कर
पंजाब, असम, काश्मीर बनवाया गया है।
यह सब होता रहा,
गरीबी की रेखा को
ऊपर-नीचे करने का खेल चलता रहा।
उनकी बिलासिता के साधनों का
उत्पादन न रूका,
पर मजदूर का पसीना व खून बहता रहा।
यह हैरत की बात है कि
दुनियां में बदसूरती के ये टापू
कभी बनते, कभी मिटते रहे,
पर मजदूरों की बाजूओं में
फड़कती ताकत का,
सुंदरता का दरिया हमेशा उमड़ता रहा।

(४)

दुनियां के सुंदर खाके पर
बदसूरती के छींटे पड़ते रहते हैं।
मजदूर कमजोर बना रहे
इसके लिये क्या खेल नहीं खेले गये।
स्वचालित मशीनों से उसके हाथ काटे गये हैं,
प्रगति का हवाला देकर
रोजी-रोटी के साधन छीने गये हैं।
रासायनिक खाद, जहरीली दवा व विदेशी कर्ज
की खोखली बुनियाद के सहारे
मंहगे अनाज से गोदाम भर लिये गये हैं,
ताकि वह उसे खरीद न सके।

यह सब इसलिये है
ताकि खाली पेट उसे
घुटने टेकने को मजबूर किया जा सके।
ऊंचे-ऊंचे बांध बनाये जा रहे हैं,
ताकि आंकड़ों में उलझाकर
उसके घर से उसे ही बेदखल किया जा सके,
बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को न्यौता देकर
यूनियन कार्बाइड बनवाया है,
ताकि आबोहवा में जहर घोलकर,
झुग्गी-झोपड़ियों को वीरान कर,
हिन्दुस्तान का इंसाफ खरीदा जा सके।
शानदार बहुमंजली इमारतें
और शापिंग काम्पलेक्स बनवाये जा रहे हैं,
ताकि उनको बनाने वाला
खुले आसमान के तले तारे गिन सके।
मजदूरों के बच्चों को
स्कूलों से बाहर रखा गया है,
ताकि वे बड़े होकर
विज्ञान और समाज की जानकारी
के हथियारों को लेकर
उनकी व्यवस्था को टक्कर न दे सकें।
चकाचौंध योजनाओं के नाम पर
रूबल, येन और डालर की यह मिसाल है।
दुनियां को बदसूरत बनाने की चाल है।
अब तो फैसला करना ही होगा।
उनकी प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों को
अपने कब्जे में लेकर,
अपने स्कूलों में, अपने अस्पतालों में;

अपने कारखानों, खदानों, खेत-खलिहानों में,
अपने नजरिये से ज्ञान का सृजन कर,
मजदूर को अपना विकल्प
खुद ही गढ़ना होगा।

(५)

यह उनका भ्रम है कि
सुंदर दुनियां को कटीले तारों से
घेरा जा सकेगा
और मजदूरों को उसमें घुसने से
रोका जा सकेगा।
इसीलिये हमें अपनी सांसो की गर्मी से
इंसान के अंदर छिपे पिशाच को सुलझाना होगा।
लगातार संघर्ष करके
हर आंसू को अंगारे में
और हर मौत को शहादत बनाना होगा।
तभी तो तुमने
जिंदगी को सच्चा प्यार किया है,
इसका सबूत मिल सकेगा।
तभी हर इंसान
उनकी कटोली तारों को उखाड़कर
सुंदर दुनियां को
जी भरके प्यार कर सकेगा।

डॉ० अनिल सद्गोपाल

१९/११/१९९१

(कामरेड नियोगी द्वारा टेप किये गये संदेश एवं २८ अगस्त, ९१ को भिलाई की अन्तिम आमसभा में व्यक्त विचारों से प्रेरित यह कविता विशिष्ठ शिक्षा विद व विज्ञानी डॉ० अनिल सद्गोपाल ने लिखी है।)

नियोगी भेजता हूं
तुम्हें लाल सलाम
अच्छा फल मिला तुम्हें-देश से गरीबी हटाने
का
तुम जानते थे कि गांधी की मौत मरोगे
इसीलिये अपना जन्मदिन भी याद नहीं था न
चाहते थे तुम
कि याद रखे कोई तुम्हारा जन्मदिन।
एक ऐसा दिन
दिखावा और मानसिक-विलासिता के पोषण
का
समाज के अलमबरदार
जब तुम्हें जन्मदिन के बहाने याद करते
और तुम्हें
तुम्हारे कद से और छोटा कर देते!
यह जानते हुए भी कि–
लोहा
या लोहे की धरती जब भी गर्म हो
रोटियाँ सेंकी जाती हैं
तुम अहिंसक खुसूसियत और मुलामियत
की बर्फ
जमा लेना चाहते थे मजदूरों की जेबों में।
और इस्पाती दहकते अँगारों के बीच
तुम अपना सीना चीरकर
दिखा रहे थे अपना लहू सेंकने के लिए
इस्पाती संस्कार लहू का कितना प्यासा है

यह भी जानते थे तुम..?
भेजता हूं तुम्हें लाल सलाम
उस चीरघर व्यवस्था की ओर से
गांधी के देश के नागरिकों की ओर से भटकते मजदूर
सिसकते किसानों की आंखों के भीगते कोर से
उद्योगपति अब
तुम्हारे लोहू से सिंची गई धरती पर मजदूरी
करेंगे
पड़ती भूमि पर अपना सफेद पोश मुखौटे
लेकर
खेती करेंगे
शांति के कपोत उड़ायेंगे
और डालडा से पराठा सेकेंगे।
यह व्यवस्था
जीने नहीं देगी शान से, यह तुम्हें मालूम था
ओ नियोगी शंकर के
अकेले ही पी गये तुम
दहकते इस्पाती अंगारे, चिमनी से निकलते
धुएं
सारे प्रदूषण समस्त कोलाहल
और इनसें उपजी सच्चाईयों के विष
अकेले ही...।
तुम्हें मालूम नहीं था
अपना जन्मदिन
क्योंकि तुम जानते थे अपना मरणा दिन।
वह मौत जो हर मजदुर मरता है
प्रतिदिन–
वह मौत जो हर किसान मरता है

गल्ला की मंडी में
वह मौत जो हर गांधी मरता है
देश की अन्जान सड़कों पर...।
पुण्य तिथि और शहादतों के दिन
और भी बहुत हैं इस देश में मनाये जाने के
लिए–
स्वीकार लेना मेरा सलाम
ओ नियोगी–
भेजता हूं तुम्हें लाल-सलाम।

डॉ० अजीज रफीक
१३/१०/९१

तुम्हें याद करेगा

आज के बाद छत्तीसगढ़ में जो भी जनम लेगा
रोने के बदले हाथ उठाकर इन्कलाब कहेगा।
जब भी कोई नन्हा क्रांतिकारी क्रांति का इतिहास पढ़ेगा,
किताबों में लिखा रहे या न रहे तुम्हें याद करेगा।
जब-जब किसान एक बूंद पानी के लिये तरसेगा
उद्योगों के लिए संचित जल भंडार देकर तुम्हें याद करेगा।
जब जब मरीज बिना दवा के जिंदगी से लड़ेगा
मौत के गोद में सोते-सोते तुम्हें याद करेगा।
जब-जब कल कारखानों में शोषण बढ़ता रहेगा
मुक्ति चाहनें वाले लड़ाई के मैदान में तुम्हें याद करेगा।
फिर ऐसा एक दिन आएगा
किसान मजदूर एक होकर सुनहरा छत्तीसगढ़ बनाएगा
खेतों में पानी, मरीजों की दवाई, मजदूरों का हक मिलता रहेगा।
उस दिन खुशी में झूमते हुए सारे छत्तीसगढ़ तुम्हें याद करेगा।

कल्पना घोष

तुम्हें क्रांतिकारी सलाम

शंकर गुहा नियोगी
तुम्हें क्रांतिकारी सलाम।
सुबह की प्रणय बेला में
तुम्हारे शरीर में छः गोलियां डाल दी गई।
तुम्हारे खून के छींटें बहुत दूर दूर उछले हैं
पहाड़ों में, खदानों, जंगलों, झाड़ों में,
गली कूचों में, झोपड़पट्टियों में,
मजदूरों में, किसानों में।
भूखों में, नंगों में,
लड़ने वालों में—चुप रहने वालों में।
आज सितंबर की अट्ठाइस तारीख को,
जो सूरज उगा है, वो तुम्हारे खून से सना है।
दोस्त, तुम तो लड़ लिये खूब लड़े
अब देखना है कि लोहे की गोलियों ने
पीछे रहने वालों को जो चुनौती दी है
उसका सामना हम कैसा करेंगे..?

—अमित (भावुआ)

सारा जेल हैरान है

जो हां
सारा जेल हैरान है
जेलर से खूंखार अपराधी तक
सब यह गुत्थी सुलझाने को
परेशान है
कि आखिर वह कौन सी वजह है
वह कौन सी उमंग है
कौन सी ताकत है वह
जिसके बल पर
वह कैदी
अंधेरी कोठरी में रहकर
जहां गर्मी और पसीने में
गंदगी और बेहाली में
उसके बाल नोचे गये
नाखून उखाड़े गये
निरंतर तड़पाया गया
रातों जगाया गया
यह सब झेलकर भी
मुस्कराता है
मीठे बोल बोलता है तो
जोश से नारा भी लगाता है
उल्लासित होकर, प्रफुल्लित होकर
कहां से मिला यह उल्लास
कहां से मिली यह ताजगी
समझ न पाये हैं जेलर
समझ न पाये हैं अपराधी

रहस्य जानता है सिर्फ अमलू चौकीदार
जिसने एक छोटा सा मुचड़ा कागज
चुपके से कैदी को थमा दिया था
जो इतना छोटा था
कि आसानी से गुम जाता
जो इतना मुचड़ा था
कि आसानी से मिट जाता
पर उस पर जो अक्षर लिखे गये
उनके कारण वह जियेगा वह हजारों साल
जिन्हें लिखा था
बंगाल के एक गांव में बसे
एक बूढ़े बाप ने
लड़खड़ाते हाथों से
फीकी स्याही से
जिस पर चंद आंसू भी
ढुलक गये थे
लिखा था बस इतना
कि अच्छा लगता
जो बुढ़ापे में
इस बूढ़ी लाठी का सहारा बनते
पर इतना पवित्र विश्वास है
तुम्हारी स्वर्गवासिनी मां की सौगंध
कि जहां तुम हो, जो कर रहे हो
वह इससे भी जरूरी है

–भारत डोगरा

(शहीद शंकर गुहा नियोगी को अपनी बहुत कम उम्र के जीवन में ही बहुत ख्याति मिली। दूर-दूर तक उनके कार्य की चर्चा हुई, पर शुरू में एक समय ऐसा था जब जेल में भयंकर उत्पीड़न झेलते हुए वे बेहद अकेले पड़ गये थे। उन दिनों के जीवन पर युवा पत्रकार भारत डोगरा द्वारा यह कविता लिखी गई है।)

आज की ताजा खबर

अखबार का हॉकर सड़क पर चिल्ला रहा है,
चिल्ला-चिल्ला कर लोगों को बता रहा है,
आज की ताजा खबर.....
कि
वह बच नहीं पाया इस बार
सफल हो गई है उसे पकड़ने में वर्तमान सरकार।
वह,
जो है एक अपराधी खूंखार
सनसनी खेज आरोपों से लैस
वह रात बिरात, दिन-दहाड़े
घूमता फिरता था,
खेतों में, खलिहानों में, खदानों में,
मिलों में, कारखानों में।
मजदूरों को उनकी औकात का
एहसास कराता था,
जब चाहे तब कहीं भी काम बंद हो जाता था।
आम लोग उसकी बात समझकर
मानने लगे थे,
हिम्मत से सीना तानने लगे थे,
बदतमीज हो गये थे इतने
कि सेठों, अफसरों, मिल मालिकों पर
रौब झाड़ने लगे थे।
एक के बाद एक
कारखानों, गांवों और झोपड़पट्टियों, में
लाल-हरा झन्डा गाड़ने लगे थे।
कांपने लगी थी पूंजीपतियों की तिजोरियां,

ठेकेदारों का हाथ बार-बार अपनी जेबें सम्हालता था,
दारू की दुकानों की पेटियां भर नहीं पाती थी,
उसके आंतक से
धन्ना सेठों की नींद उड़ जाती थी।
भला हो वर्तमान सरकार का
जिसने उसे पकड़ लिया,
और उसे लोहे की सलाखों के पीछे ड़ाल दिया।
अब सब कुछ सुरक्षित हो गया है
टल गया है खतरा,
अमन चैन हो गया है चारों ओर
थम गया है शोर
ओम् शांतिः शांतिः शांतिः

डॉ० श्याम बहादुर नम्र

(४ फर. ९१ को मध्यप्रदेश की भा० ज० पा० सरकार द्वारा शंकर गुहा नियोगी की गिरफ्तारी पर लिखी गई।)

एक अभेद्य दीवार

हत्यारे के हाथ
अपनी औकात भर दिखा पाते हैं
बस्स
कोई गोली या कोई कटार
आवाज की बुलंदी का
गला घोंट नहीं पाती
जो दरख्तों का हरापन है
उनका संकल्प।

पिघलते फौलाद का लाल रंग
ऊपर उठकर
आकाश की लाली बन जाता है
पिघलते फौलाद का लाल रंग
जमीन पर फैल कर
बस्ती से जगंलात तक
एक अभेद्य दीवार की तरह तन जाता है।

वही आकाश की लाली
आवाज की बुलंदी
वही अभेद्य दीवार
देखिये अभी भी
यहीं कहीं होगी
यानी कि.....
शंकर गुहा नियोगी।

–सुरेश सलिल

(समकालीन तीसरी दुनियां, दिसंबर ९१)

हम जागे हैं...

साथी जानता हुँ
कई दिनों से तुम्हारी आंखों में नींद न थी
संघर्ष में क्षत-विक्षत होकर
शरीर तुम्हारा थक चुका था,
फिर भी अच्छा होता
अगर कुछ दिन
तुम्हारा उष्ण स्पर्श
इस लाल धरती पर होता।
क्योंकि खेत-खदानों के भाई-बहनों के साथ
मैं भी एक मुक्त भूमि का सपना देखी थी।
साथी!
सुदूर अतीत से
जिन खूनी पंजों ने
विनय–बादल–मातंगिनी
क्षुदिराम-भगतसिंह के खून से रंगकर
आज निःशब्द बुलेट से
तुम्हारे खून की होली खेली,
मेरी आवाज तुम तक अगर पहुंच रही हो
तो साथी सुनो
हमारी घृणा की आग से
उन सोन-कुत्तो की चिता में आग लगी है।
हम जागे हैं...
तुम्हारे शव को कफन में ढककर जागते रहेंगे
हमारे हजारों हाथों के प्रतिरोध से
तुम्हारे खून का बदला लेंगे।
तुमने

खेत-खदानों में
जो गुलमोहर का बीज बोया
उस अकुंर को पहचान कर
जिसने हवा से खुशबू लिया,
एक दिन छत्तीसगढ़ में
वो गुलमोहर का झन्डा फहरायेगा।

–शीला चक्रवर्ती

(कामरेड शीला चक्रवर्ती की एक बंगला कविता का अनुवाद किये हैं हमारे साथी भक्ति घोष।)

उनके यादें रहें...

रहे रहे
उनके यादें रहें
हमेशा हर दिल में रहें
रहे रहे.....
न हम उन्हें भूलेंगे,
न हम भूल पायेंगे,
खेत-कारखानों से इशारो में
वो हमें बुलाते रहे,
रहे रहे.....

उनकी पुकार से बदलते रहे दिन,
इस देश में हर जाति बने स्वाधीन,
हर खेत के मालिक बने किसान,
हर मजदूर बने अपनी तकबीर का भगवान,
हर घर में शिशुओं की हंसी खिलती रहे,
रहे रहे.....

जो हमारे दिल में बसा है, उसे छीनने
रात के अंधेरे में कातिल बुलाया मूर्ख ने,
वह बुलाते रहे, हम हँसते रहे,
रहे रहे.....

— सृजन सेन

(कामरेड शंकर गुहा नियोगी के याद में बंगाल के क्रांतिकारी कवि सृजन सेन ने एक सुंदर बंगला कविता लिखी। भक्ति घोष ने उसका अनुवाद किया है।)

शंकर एक उज्जवल सितारा का नाम

आंसू पोंछ डालो
आंसू से कविता लिखो....
नहीं
मैं अब कविता नहीं लिख सकता,
सारे रात राजहरा का आसमान कविता लिखता है।

शंकर उस आसमां को देखा
वहां पानी नहीं है
आंसू नहीं है
सिर्फ सितारा
सितारा की हवा.....

अगर कुछ कामचोर सन्यासी के दिमाग से
शुक्र, शनि,अरूंधती आदि सितारे के नाम निकल सकते,
तो क्यों हजारों कामगार के दिमाग से
एक सितारा का नाम नहीं आयेगा?
आज से दल्ली-राजहरा के सितारा का नाम शंकर!

भिलाई में
सितारा शंकर का रोशनी बिखरेगा
रोशनी की टक्कर से शुरू होगा आंधी तूफ़ान
खूनी शैतानों की कब्र के लिये
छत्तीसगढ़ छोड़ देगी थोड़ा सा स्थान!

—समीर राय

(बंगाल के क्रांतिकारी कवि समीर राय कामरेड नियोगी के छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के पुराने मित्र भाषित घोष उनकी बंगला कविता का अनुवाद किये हैं।)